(सलामों का मजमूआ)

वसल्लिमू तसलीमा

कलामे शायरे जिद्दत शिआर,अदीबे ज़ी वक़ार

हज़रत सैय्यद मुहम्मद नूरूल हसन 'नूर' नव्वाबी अज़ीज़ी

आस्तानए आलिया क़ाज़ीपुर शरीफ़, ज़िला फ़तेहपुर (हसवा) यू०पी०

मुरत्तिब

यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी

सलामों का मजमूआ

वसल्लिमू तसलीमा

कलामे शायरे जिद्दत शिआर अदीबे ज़ीवक़ार

हज़रत अश्शाह सय्यद मोहम्मद नूरुल हसन
नूर नव्वाबी अज़ीज़ी

मुरत्तिब

यावर वारसी अजीजी नव्वाबी

88 / 242–डी, चमनगंज, कानपुर

जुमला हुक़ूक़ बहके शाइरो नाशिर महफ़ूज़

नाम किताब	:	वसल्लिमू तसलीमा
नाम शाइर	:	शायरे जिद्दत शिआर अदीबे ज़ीवक़ार सय्यद मुहम्मद नूरुल हसन नूर नव्वाबी अज़ीज़ी
मुरत्तिब	:	यावर वारसी अजीजी नव्वाबी
सरे वरक़	:	रिज़वान आरिफ़, कानपुर
साइज़	:	18X22/8 (डीमाई)
सने इशाअत	:	फ़रवरी 2018
तादाद	:	500
तबाअत ब एहतेमाम	:	स्माईल ग्राफ़िक्स, कानपुर
नाशिर	:	यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी व शायरे मोहतरम
क़ीमत	:	100/–
राब्ता	:	+91-9455306981

मिलने के पते

1. आस्तानए आलिया नव्वाबिया,
   क़ाज़ीपुर शरीफ़, ज़िला फ़तेहपुर (हसवा) यू0पी0
2. यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी,
   88/242–डी, चमनगंज, कानपुर (उ0 प्र0)

इन्तिसाब

आक़ाईयो मौलाई हुज़ूर शम्सुल आरिफ़ीन, बदरुल कामिलीन,
फ़ख़रुस्सालिकीन, कुदवतुलवासिलीन, महबूबुल मुक़र्रबीन
आशिक़े सय्यदुल मुरसलीन हज़रत अलहाज सूफ़ी

सय्यद नव्वाब अली शाह

हसनी अज़ीज़ी, जहाँगीरी, मुनअमी, अबुल उलाई,
नक़्शबन्दी, चिश्ती, क़ादरी, सोहरवर्दी
रज़ियल्लाहु तआला अन्हु

गर कुबूल उफ़्तद ज़हे इज़्ज़ो शरफ

यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी

بسم الله الرحمن الرحيم

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ
وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ
عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝
اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى
اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى
اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝

फ़ेहरिस्त

1. ऐ दस्ते अता तेरी इनायत को सलाम...यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी 7
2. मजहरे शाने किबरिया सल्ले अला मुहम्मदिन 13
3. दिलों के वास्ते है बाइसे करार दुरूद 15
4. सलाम उस पर जो किश्वरे दीं का ताजवर है 17
5. या नबी सलाम अलैका 19
6. ऐ आमिना के लाल हमारा सलाम लो 24
7. सरवरे सरवराँ सलामु अलैक 26
8. ऐ शहनशाहे रसूलाँ अस्सलातो वस्सलाम 28
9. सय्यदुल अव्वलीं सलामु अलैक 30
10. सरकारे काएनात हमारा सलाम लो 32
11. दाफेए आलामो कुल्फत अस्सलाम 34
12. साहिबे उम्दा सियर तुमपे दुरूद और सलाम 37
13. रुबाइयाँ 39
14. राकिबे दोशे पयम्बर अस्सलाम 40
15. मिल्लत के ताजदार हमारा सलाम लो 42
16. तेरी अजीमतो जुरअत को बेशुमार सलाम 45
17. ऐ फखे सालिकाँ शहे नव्वाब अस्सलाम 47
18. अकमलुल औलिया सलामु अलैक 49

786 / 92

ऐ दस्ते अता तेरी इनायत को सलाम

उर्दू लुग़ात में "सलाम" के कई मानी लिखे गए हैं जिनमें एक सलामती भी है और सलाम का यह माना कुरआन से भी साबित है । सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने सलाम को आम करने का हुक्म दिया है और एलान फ़रमाया है कि जब तुम एक दूसरे से मिलो तो सलाम करो और सलाम का जवाब देना वाजिब है ।

कुरआने हकीम की मुतअद्दिद आयतों में सलाम का ज़िक्र आया है । मुख़तलिफ़ मुक़ामात पर अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ने अपने मक़बूल बन्दों और अम्बिया ओ रूसुल पर सलाम भेजा लेकिन जब अपने महबूबे ख़ास सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर सलाम भेजने का मौक़ा आया तो फ़रमाया :

إِنَّ اللَّهَ وَمَلَائِكَتَهُ يُصَلُّونَ عَلَى النَّبِيِّ ۚ يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا صَلُّوا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوا تَسْلِيمًا (سورۃ الاحزاب ٥٦)

तर्जुमा : "बेशक अल्लाह (जल्ला शानहू) और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बर सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरूद भेजते हैं, ऐ अहले ईमान ! तुम भी उनपर दुरूदो सलाम भेजा करो ।"

साफ़ और सरीह अलफ़ाज़ में फ़रमाया गया कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते पैग़म्बरे आज़मो अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरूद भेजते हैं ऐ ईमान वालो तुम भी उनपर दुरूदो सलाम भेजा करो। इस आयते मुबारका में ख़बर भी है और हुक्म भी । ख़बर यह कि अल्लाह और उसके फ़रिश्ते रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरूद भेजते हैं, हुक्म यह है कि ऐ ईमान वालो ! तुम भी मेरे महबूब पर दुरूदो सलाम भेजो । ज़माने की भी क़ैद नहीं है कि कब दुरूद भेजो और कब न भेजो यानी तसलसुल के साथ दुरूद भेजे जाने का हुक्म है।

यही वह हुक्म है जिसने आक़ाए कायनात अलैहित्तहीयतु वस्सना पर दुरूदो सलाम को अहले ईमान ख़ुसूसन आशिक़ाने मुस्तफ़ा का शेवा और दस्तूर बना दिया ।

आक़ाए कायनात फ़ख़्रे मौजूदात अलैहिस्सलातु वत्तसलीम पर नस्रो नज़्म दोनों में सलाम भेजने का रिवाज मुसलमानों में आम है । दुनिया की हर ज़बान में आपको सलाम भेजने का दस्तूर है लेकिन मेरा मौज़ूए सुख़न उर्दू नज़्म है इसलिए उसी के पस मँज़र में गुफ़्तुगू करूँगा।

अहादीसे मुबारका में भी ज़्यादा से ज़्यादा दुरूद भेजने की तलक़ीन के इशारे मिलते हैं लिहाज़ा नबीए आख़िरूज़्ज़माँ अलैहित्तहीयतु वस्सना के जाँ निसारों ने इसे अपना वतीरा और तरीक़ा बना लिया ।

रसूले आज़मो अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम के दौरे हयाते ज़ाहिरी से आजतक जितने भी नातगो शोरा हैं तक़रीबन सभी ने नात निगारी के साथ–साथ सलामो दुरूद का अमल जारी रक्खा है । इसमें किसी ज़बान की क़ैद नहीं । उर्दू नातगो शोरा के यहाँ भी यह रिवायत तवातुर के साथ मौजूद है । नतीजतन दुरूदो सलाम का एक बेबहा ख़ज़ाना उर्दू ज़बान के दामन में इकट्ठा हो गया ।

मेरे पीरो मुर्शिद हज़रत सूफ़ी सैय्यद मुहम्मद अज़ीज़ुल हसन शाह नव्वाबी लियाक़ती अबुलउलाई चिश्ती क़ादरी साहिबे सज्जादा आस्तानए आलिया नव्वाबिया क़ाज़ीपुर शरीफ़ ज़िला फ़तेहपुर (हसवा) के बिरादरे ख़ुर्द मोहतरमुल मुक़ाम इज़्ज़त मआब सैय्यद मुहम्मद नुरूल हसन 'नूर' नव्वाबी अज़ीज़ी क़िबला की फ़िकरी परवाज़ बहुत बुलन्द है। ख़्वाह वह ग़ज़ल हो या नात, उनका शेर कहने का अन्दाज़ क़ाबिले ज़िक्र इनफ़िराद का हामिल है । नातगोई में तो आपका नामे नामी इस्मे गिरामी सरहदों को उबूर करके आलमी पैमाने पर दादो तहसीन वसूल कर रहा है । जनाबे नूर की नातिया शायरी में मज़ामीन की जिद्दत तराज़ी और नई तराकीब वज़अ करने का उन्सुर उनकी तख़लीक़ात को मीज़ाने एतबार अता कर रहा है ।

जनाबे नूर ने नात निगारी के साथ–साथ हुक्मे ख़ुदा व रसूल पर अमल करते हुए दुरूदो सलाम के नज़राने भी पेश किए हैं और ख़ूब ख़ूब पेश किए हैं जिनका मुतालआ रूह को बालीदगी और दिलों को बहारे ताज़ा से हमकिनार करने के लिए काफ़ी वाफ़ी शाफ़ी है ।

राक़िमुल हुरूफ़ गुलाम पर उनका यह ख़ुसूसी करम है कि आमतौर से उनके हर कलाम से फ़ैज़याब होने का मौक़ा सबसे पहले मुझे मिलता है लिहाज़ा उनकी तमाम तख़लीक़ात मेरी समाअत को फ़ैज़याब करती रहती

हैं। उनकी शेरगोई का अन्दाज़ मुझे हैरतअंगेज़ मसर्रत से हमकिनार करता है।

कमोबेश उनकी तमाम तख़लीक़ात सोशल मीडिया के ज़रिया आलमी दादो तहसीन के तोहफ़ों से उनके दामन को पुर करती रहती हैं और उनकी अज़मतों का मीनार रोज़ाना नई बुलन्दियों को छूता है ।

एक दिन अचानक मुझे ख़याल आया कि अगर उनके सलामों को यकजा करके किताबी शक्ल दी जाए तो अवामो ख़वास सब उससे फ़ैज़याब हो सकते हैं । बस इसी ख़याल ने मुझे इस किताब की तरतीब की तरफ़ मायल किया और इस ख़याल का इज़हार मैंने हज़रत नूरूल हसन मियाँ से किया । वह पहले तो इंकार करते रहे लेकिन आख़िरकार उन्होंने मेरी इल्तिजा को दौलते इजाज़त अता करते हुए अपना तमाम सलामिया कलाम मुझे इनायत कर दिया ।

आइये आप भी एक मुख़लिसाना नज़र उनके सलामिया कलाम पर डालिए और देखिए कि जनाबे नूर का यह असासा किस अहमियत का हामिल है ।

जनाबे नूर का जो कलाम मुझे हासिल हुआ उसमें ग्यारह सलाम आक़ाए कौनो मकाँ सरवरे इंसो जाँ महबूबे रब्बुल उला अहमदे मुजतबा मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम की बारगाहे बेकस पनाह में पेश किए गए हैं । तीन सलाम शहीदे वफ़ा, शहज़ादए गुलगूँ क़बा सैय्यदना इमाम हुसैन अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम की बारगाहे आलीवक़ार में पेश किए गए हैं । दो सलाम दादा हुज़ूर शम्सुल आरिफ़ीन बद्रूल कामिलीन फ़ख़्रूस्सालिकीन महबूबुल मुक़र्रिबीन आशिक़े सैय्यदुल मुरसलीन हज़रत अलहाज सूफ़ी सैय्यद नव्वाब अली शाह हसनी अज़ीज़ी अबुलउलाई चिश्ती क़ादरी अलैहिर्रहमतु वर रिज़वान की बारगाह में नज़रानए अक़ीदतो मुहब्बत के तौर पर पेश किए गए हैं ।

इन तमाम सलामों में ख़ुलूसो मुहब्बत और अक़ीदत का दरया ठाठें मारता नज़र आता है । हर मिसरा महबूबाने बारगाहे रब्बुल इबाद के दरयाए इश्क़ में ग़ोताज़न है । ज़बानो बयान की सफ़ाई, चुस्ती और दुरूस्ती हर सामेअ और क़ारी से बेसाख़ता वाह वा कहलवाने की भरपूर सलाहियत रखती है ।

आइये, चन्द अशआरे सलामो दुरूद आपकी बारगाह में पेश करता हूँ । देखिए मैं अपने दावे में कहाँ तक हक़ बजानिब हूँ :

मज़हरे शाने किबरिया सल्ले अला मुहम्मदिन
नौशए बज़्मे दोसरा सल्ले अला मुहम्मदिन
ख़ामए इश्क़े मुस्तफ़ा मुझपे जो मेहरबाँ हुआ
दिल के वरक़ पे लिख दिया सल्ले अला मुहम्मदिन

नबी के जलवए ज़ेबा पे ताबनाक सलाम
नबी की ज़ुल्फ़े मुअत्तर पे मुश्कबार दुरूद
सुनो, सुनो कि यह नुस्ख़ा है आज़माया हुआ
मिटाने वाला है ज़ह्नों का इन्तिशार दुरूद

सलाम उसपर जो किशवरे दीं का ताजवर है
दुरूद उसपर जो नौए इंसाँ का मुफ़तख़र है
सलाम उसपर है ताजे लौलाक जिसके सर पर
दुरूद उसपर जो वजहे ईजादे बहरोबर है

फिर यह चार मिसरे जिनको बक़ाए दवाम की सनद अता की जा चुकी है और जिन पर हर शायरे नात ने मिसरे लगाना सआदत का मोजिब जाना और जिनको बारगाहे सरकारे दोआलम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से कुबूलियत की सनद मिल चुकी है (यह मेरे विजदान की आवाज़ है), इन पर हज़रते नूर तबअ आज़माई न करते, मुमकिन न था । उन्होंने किस ख़ूबी से इन पर मिसरे लगाए हैं यह फ़ैसला आप पर छोड़ता हूँ :

चाहतों की आरज़ू हो
आरज़ू की जुस्तुजू हो
जुस्तुजू की तुम हो मंज़िल
इश्क़ की तुम आबरू हो
या नबी सलाम अलैक या रसूल सलाम अलैक
या हबीब सलाम अलैक सलवातुल्लाह अलैक
मज़हरे ज़ाते क़िदम हो
बहरे ज़ख़्ख़ारे निअम हो

पैकरे लुत्फ़े अतम हो
नैय्यरे चर्ख़े करम हो
या नबी सलाम अलैक या रसूल सलाम अलैक
या हबीब सलाम अलैक सलवातुल्लाह अलैक

ये भी देखिये :

ऐ शहँशाहे रसूलाँ अस्सलातु वस्सलाम
ताजदारे नौए इंसाँ अस्सलातु वस्सलाम
एक इक पत्ती के लब पर है तिरा ज़िक्रे जमील
पढ़ रहा है गुलशने जाँ अस्सलातु वस्सलाम

हज़रत बिश्र बिन साद रज़ियल्लाहु अन्हु ने आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम से पूछा कि "ऐ अल्लाह के प्यारे रसूल सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम! अल्लाह ने हमें आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर दुरूद पढ़ने का हुक्म दिया है तो हम आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम पर किस तरह दुरूद पढ़ें ?" आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ख़ामोश हो गए और इतनी देर ख़ामोश रहे कि हम ख़्वाहिश करने लगे कि काश हमने सवाल न किया होता, चुनान्चे आप सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ने फ़रमाया : तुम कहा करो :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ · اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ

(सहीह बुख़ारी शरीफ़ 2442)

यह वह दुरूद शरीफ़ है जिसके बग़ैर नमाज़ मुकम्मल नहीं होती और यह दुरूदे पाक आले रसूल पर सलाम भेजने का बैयन जवाज़ भी है :

कर्बला के ताजदार शहज़ादए गुलगूँ क़बा सैय्यदना इमाम हुसैन अला जद्दिही व अलैहिस्सलाम की बारगाह में नज़रानए सलाम पेश करते हुए कहते हैं :

तेरी अज़ीमतो जुरअत को बेशुमार सलाम
हुसैन ! तेरी इमामत को बेशुमार सलाम
हुसैन ! तेरे तदब्बुर पे बेहिसाब दुरूद
हुसैन ! तेरी फ़रासत को बेशुमार सलाम

सबसे आख़िर में दादा हुज़ूर शम्सुल आरिफ़ीन बद्रूल कामिलीन फ़ख़्रूस्सालिकीन महबूबुल मुक़र्रिबीन आशिक़े सैय्यदुल मुरसलीन हज़रत अलहाज सूफ़ी सैय्यद नव्वाब अली शाह हसनी अज़ीज़ी अबुलउलाई चिश्ती क़ादरी अलैहिर्रहमतु वर रिज़वान की बारगाह में सलाम के यह अशआर पढ़िये और अपनी अक़ीदतों को जिला बख़्शिए :

ऐ फ़ख़्रे सालिकाँ शहे नव्वाब अस्सलाम
ऐ बद्रे कामिलाँ शहे नव्वाब अस्सलाम
ऐ नायबे हुसैनो हसन शाने बुलउला
ऐ फ़ख़्रे ख़ानदाँ शहे नव्वाब अस्सलाम
ज़ेबे तख़य्युलात, मताए दिलो नज़र
तौक़ीरे गुलसिताँ शहे नव्वाब अस्सलाम

तीन सलामिया रूबाइयाँ भी बारगाहे रसूले अनाम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम में पेश की हैं । बहरों की रंगारंगी हज़रते नूर की फ़न्नी चाबुकदस्ती और महारत का मुँह बोलता सुबूत है ।

हज़रत नूरूल हसन मियाँ ने तरतीबो इशाअत की इजाज़त मरहमत फ़रमाकर मुझ गदाए दर पर जो करम किया है उसके लिए मैं हमेशा उनका क़र्ज़दार रहूँगा ।

हज़रते नूर के पास नातो मनक़बत और ग़ज़लयात का इतना ज़ख़ीरा है कि कई दवावीन मँज़रे आम पर आ सकते हैं लेकिन नजाने क्यों वह अपने कलाम की इशाअत की तरफ़ तवज्जो नहीं देते । यह पहला मौक़ा है जब हज़रत का कोई कलाम पक्की सियाही से काग़ज़ पर अपनी ताबानियाँ बिखेर रहा है ।

अल्लाह अज़्ज़ा व जल्ल ब–सदक़ए रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम हज़रत नूरूल हसन मियाँ के इन सलामों को क़ुबूले आम की सनद से नवाज़े और मेरे लिए दुनयवी व उख़रवी इज़्ज़तों का ज़रिया बनाये । आमीन बिजाहि सैय्यदुल मुरसलीन सल्लल्लाहु अलैह वसल्लम ।

यावर वारसी अज़ीज़ी नव्वाबी
12 फ़रवरी 2018 ई0 दिन दोशम्बा

मज़हरे शाने किबरिया सल्ले अला मुहम्मदिन

मज़हरे शाने किबरिया सल्ले अला मुहम्मदिन
नौशऐ बज़्मे दोसरा सल्ले अला मुहम्मदिन

चश्मऐ बख़्शिशो नजात यानी मदारे कायनात
क़ासिमे नेमते ख़ुदा सल्ले अला मुहम्मदिन

आलमे शश जिहात में कूचए मुमकिनात में
गूंज रही है ये सदा सल्ले अला मुहम्मदिन

कैसे कोई ग़ुबारे शर मेरी तरफ़ करे नज़र
रहता है विर्दे लब सदा सल्ले अला मुहम्मदिन

ख़ामए इश्क़े मुस्तफ़ा मुझपे जो मेहरबाँ हुआ
दिल के वरक़ पे लिख दिया सल्ले अला मुहम्मदिन

बाग़े तख़य्युलात में झूम रही हैं नकहतें
पढ़ता है कोई बरमला सल्ले अला मुहम्मदिन

अह्ले ख़िरद की आरज़ू अह्ले नज़र की जुस्तुजू
अह्ले सफ़ा का मशग़ला सल्ले अला मुहम्मदिन

रौशनिए हरीमे नूर वाक़िफे ग़ैबतो ज़हूर
शाहिदे जलवए ख़ुदा सल्ले अला मुहम्मदिन

सुब्हे करम अदा तेरी शह्दो शकर नवा तेरी
तेरा जमाल बेबहा सल्ले अला मुहम्मदिन

अब्रे बहारे जावेदाँ लुत्फ़ के बागे बे–खिज़ाँ
मौजे नसीमे जाँ फज़ा सल्ले अला मुहम्मदिन

नूरे चरागे इबतिदा, बाइसे बज़्मे इन्तिहा
रब्बे अज़ीम की रज़ा सल्ले अला मुहम्मदिन

राहते जाने आशिकाँ विर्दे ज़बाने आरिफ़ाँ
ज़िक्रो बयाने मुस्तफ़ा सल्ले अला मुहम्मदिन

दिल का मेरे क़रार है 'नूर' मेरा शिआर है
सल्ले अला नबीयेना सल्ले अला मुहम्मदिन

दिलों के वास्ते है बाइसे क़रार दुरूद

दिलों के वास्ते है बाइसे क़रार दुरूद
इसी लिए तो मैं पढ़ता हूँ बेशुमार दुरूद

ज़रूर मौसमे रहमत की आमद आमद है
इधर से गुज़री है पढ़ती हुई बहार दुरूद

नबी के जल्वए ज़ेबा पे ताबनाक सलाम
नबी की जुल्फ़े मुअत्तर पे मुश्कबार दुरूद

खड़ा हुआ हूँ जो सहराए आतिशीं में तो क्या
है मेरे वास्ते रहमत का आबशार दुरूद

मेरी ये बात कोई काट ही नहीं सकता
कि बख़्श देता है इन्साँ को एतिबार दुरूद

दुरूद यूँ तो सभी हैं बहुत हसीन मगर
दुरूदे ताज को कहते हैं शाहकार दुरूद

हैं जिस क़दर भी ज़माने में आशिक़ाने रसूल
हर एक साँस पे पढ़ते हैं अश्कबार दुरूद

बबूल रन्जो अलम का जो नोच देता है
दुरुस्त करता है मलबूसे तार तार , दुरूद

सुनो सुनों कि यह नुस्ख़ा है आज़माया हुआ
मिटाने वाला है ज़ेहनों का इन्तिशार दुरूद

वो कुर्बे सरवरे दीं का ख़जाना पाएगा
जो सुब्हो शाम पढ़े एक इक हज़ार दुरूद

पढ़ा जो वज्द के आलम में पढ़ने वाले ने
उतर गया मेरे सीने के आर पार दुरूद

ख़ुदाए पाक बना देगा जन्नते अरज़ी
पढ़े जो शौक से सहराए ख़ार ख़ार दुरूद

मुझे यक़ीन है ऐ 'नूर' अहले अज़मत में
अता करेगा मुझे ताजे इफ़्तिख़ार दुरूद

सलाम उसपर जो किश्वरे दीं का ताजवर है

सलाम उस पर जो किश्वरे दीं का ताजवर है
दुरूद उस पर जो नौए इन्साँ का मुफ़्तख़र है

सलाम उस पर है जिसके क़दमों में अर्शे आज़म
दुरूद उस पर ये कहकशाँ जिसकी रह–गुज़र है

सलाम उस पर जिसे अन्धेरे भी मानते हैं
दुरूद उस पर जो रौशनी का पयाम्बर है

सलाम उस पर जो हुस्ने किरदार का है मज़हर
दुरूद उस पर निगाह जिसकी हयात–गर है

सलाम उस पर है जिसकी उल्फ़त मताऐ ईमाँ
दुरूद उस पर जो कुन फकाँ में अज़ीम–तर है

सलाम उस पर हबीबे रब्बे करीम है जो
दुरूद उस पर जो ख़ल्क का मतमहे नज़र है

सलाम उस पर है ताजे लौलाक जिसके सर पर
दुरूद उस पर जो वज्हे ईजादे बहरो बर है

सलाम उस पर कि माहे कामिल है जिसका मँगता
दुरूद उस पर कि मेह्र जिसका गदाए दर है

सलाम उस पर जो मेरी शब को करे फरोज़ाँ
दुरूद उस पर जो मेरा सरमायए सहर है

सलाम उस पर जो साथ रहता है बन के रहमत
दुरूद उस पर जो सारे आलम का चारा–गर है

सलाम उस पर जमाले आलम फ़िदा है जिस पर
दुरुद उस पर ख़याल जिसका हसीं गुहर है

सलाम उस पर दिये चमकते हैं जिसकी ज़ौ से
दुरूद उस पर कि जिस से रौशन मेरा खंडर है

सलाम उस पर जो 'नूर' ज़ीनत है मेरे फ़न की
दुरूद उस पर जो मेरा गन्जीनए हुनर है

या नबी सलाम अलैका

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

मुस्तफ़ा हो मुजतबा हो
साहिबे कुर्बे दना हो
क्या कहूँ सरकार क्या हो
जो कहूँ उस से सिवा हो

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

चाहतों की आरज़ू हो
आरज़ू की जुस्तुजू हो
जुस्तुजू की तुम हो मंजिल
इश्क़ की तुम आबरु हो

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

वज्हे तख़लीके जहाँ हो
ताजदारे मुरसलाँ हो
रहमते कौनो मकाँ हो
चारा साज़े बे कसाँ हो

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

अव्वलो आख़िर तुम्हीं हो
बातिनो ज़ाहिर तुम्हीं हो
सारा आलम तुम पे रौशन
शाहिदो नाज़िर तुम्हीं हो

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

मज़हरे ज़ाते क़िदम हो
बह्रे ज़ख़्ख़ारे निअम हो
पैकरे लुत्फ़े अतम हो
नय्यरे चर्ख़े करम हो

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

बेकसों की लाज रख लो
ग़मज़दों की लाज रख लो
आसियों की लाज रख लो
हम बदों की लाज रख लो

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

हाले ग़म किसको सुनाएं
दाग़े दिल किसको दिखाएं
छोड़ कर दर को तुम्हारे
और किस के दर पे जाएं

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

सोई तक़दीरें जगाओ
हाँ ज़रा जल्वा दिखाओ
नूर की ख़ैरात दे कर
तीरगी दिल की मिटाओ

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

बाइसे ईजादे आलम
फ़ख़्रे इब्राहीमो आदम
ख़ल्क़ में सब से मुकर्रम
सब से आला और मुअज़्ज़म

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

दीन तुम ईमान तुम हो
बोलता कुरआन तुम हो
अपने रब की शान तुम हो
दो जहाँ की जान तुम हो

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

सदक़ा दो नूरी रिदा का
सदक़ा दो आले अबा का
फ़ातिमा ख़ैरुन्निसा का
साहिबे गुलगूं क़बा का

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

हो अता आक़ा हुज़ूरी
देख लूँ दरबारे नूरी
सदक़ए हसनैन दे दो
'नूर' की हसरत हो पूरी

या नबी सलाम अलैका, या रसूल सलाम अलैका
या हबीब सलाम अलैका, सलवातुल्लाह अलैका

ऐ आमना के लाल हमारा सलाम लो

ऐ आमिना के लाल हमारा सलाम लो
महबूबे ज़ुलजलाल हमारा सलाम लो

ऐ साहिबे जमाल हमारा सलाम लो
ऐ मस्दरे कमाल हमारा सलाम लो

मुमकिन नहीं नज़ीर तुम्हारी जहान में
बेमिस्लो बेमिसाल हमारा सलाम लो

कहते हैं एहतेराम से कुद्सी भी सुब्हो शाम
ऐ ज़ाते ख़ुश ख़िसाल हमारा सलाम लो

जिस राह से गुज़र गए बोले शजर हजर
होकर बहुत निहाल हमारा सलाम लो

चरते हैं आगही के जो सहराओं में हुज़ूर
कहते हैं सब ग़िज़ाल हमारा सलाम लो

पढ़ता है लम्हा–लम्हा तेरी ज़ात पर दुरूद
कहते हैं माहो साल हमारा सलाम लो

ख़ैरे रसूल , ख़ैरे वरा , ख़ैरे कायनात!
बिलख़ैर हो मआल हमारा सलाम लो

अब है करम का वक़्त ग़ुलामों पे या नबी
देखो हमारा हाल हमारा सलाम लो

जब हम पढ़ें दुरूद करो तुम उसे क़ुबूल
जब हम करें सवाल हमारा सलाम लो

आसाँ हों सारे मरहले रोज़े शुमार के
गर वक़्ते इन्तिक़ाल हमारा सलाम लो

बेहद दुरूद, ऐ शहे अक़्लीमे इल्तिफात !
ऐ दाफ़ेए मलाल हमारा सलाम लो

रो–रो के कह रहे थे असीराने कर्बला
हम ग़म से हैं निढाल हमारा सलाम लो

ऐ रौनक़े हरीमे सुख़न तुम पे हो दुरूद
ऐ ज़ीनते ख़याल हमारा सलाम लो

ये आरज़ू है 'नूर' की कहता है बार बार
ऐ क़ातेए ज़लाल हमारा सलाम लो

सरवरे सरवराँ सलाम अलैक

सरवरे सरवराँ सलामु अलैक
मुर्सले मुर्सलाँ सलामु अलैक

ऐ फ़सीहुल्लिसाँ सलामु अलैक
ऐ बलीग़ुल बयाँ सलामु अलैक

अशरफ़ुल अम्बिया इमामे उमम
क़ायदे इन्सो जाँ सलामु अलैक

अस्ले कुल, वज्हे कुल, बिनाए हयात
मक़सदे कुन फ़काँ सलामु अलैक

अकरमुल ख़ुल्क, अहसनुल अतवार
मुक़बिले मुक़बिलाँ सलामु अलैक

ऐ निगारे निगार ख़ानए ग़ैब
तुर्रए महवशाँ सलामु अलैक

राज़दारे मशीयते बारी
साइरे ला–मकाँ सलामु अलैक

शाहिदो नाज़िरो बशीरो नज़ीर
नाज़े पैग़म्बराँ सलामु अलैक

रहबरे रहबराँ , शहीरे ज़माँ
ऐ शहे दो जहाँ सलामु अलैक

अब्रे अल्ताफ़ , सलसबीले अता
राहते तश्नगाँ सलामु अलैक

रहमतो शफ़क़तो इनायत के
कुलज़ुमे बे–करँ सलामु अलैक

आसमाने शरफ़ भी कहता है
ऐ मेरे आसमाँ सलामु अलैक

तुझ पे पढ़ती है मौज मौज दुरुद
कहे आबे रवाँ सलामु अलैक

शाफ़ेए हश्र साक़िए कौसर
मोहसिने आसियाँ सलामु अलैक

'नूर' ऐ 'नूर' गुनगुनाते रहो
शाहे कौनो मकाँ सलामु अलैक

ऐ शहँशाहे रसूलाँ अस्सलातु वस्सलम

ऐ शहनशाहे रसूलाँ अस्सलातो वस्सलाम
ताजदारे नौए इन्साँ अस्सलातो वस्सलाम

ऐ हबीबे रब्बे अकबर सय्यदे हर दो–सरा
इफ़्तिख़ारे इज़्ज़तो शाँ अस्सलातो वस्सलाम

अस्सलातो वस्सलाम ऐ रहमतुल्लिल आलमीं
ऐ सरापा फज़्लो एहसाँ अस्सलातो वस्सलाम

एक इक पत्ती के लब पर है तेरा ज़िक्रे जमील
पढ़ रहा है गुलशने जाँ अस्सलातो वस्सलाम

देख कर तेरी चमक ऐ रौज़ए ख़ैरुलवरा
कहते हैं बिरजीसो कैवाँ अस्सलातो वस्सलाम

ऐ नसीमे ख़ुल्दे हस्ती मौजए बादे जिनाँ
ऐ बहारे बाग़े इमकाँ अस्सलातो वस्सलाम

क़तरा क़तरा कौसरो तसनीम का महवे सना
और सदाऐ हूरो ग़िलमाँ अस्सलातो वस्सलाम

ऐ कफ़ाफे हर ज़रूरत वज्हे दुनियाऐ हयात
दस्तगीरे हर परीशाँ अस्सलातो वस्सलाम

ऐ नवैदे इब्ने मरियम ऐ मुनाजाते ख़लील
हज़रते मूसा के अरमाँ अस्सलातो वस्सलाम

नय्यरे चरख़े हिदायत, मज़हरे नूरे ख़ुदा
ऐ मनारे इश्क़ो इरफ़ाँ अस्सलातो वस्सलाम

जब हवाओं ने लिया ऐ 'नूर' नामे मुस्तफ़ा
कह उठा सारा गुलिस्ताँ अस्सलातो वस्सलाम

सैय्यदुल अव्वलीं सलामु अलैक

सय्यदुल अव्वलीं सलामु अलैक
नाज़िशे आख़रीं सलामु अलैक

रहमते आलमीं सलामु अलैक
शाफ़ेए मुज़निबीं सलामु अलैक

हामिले इल्तिफ़ात , गन्जे अता
फ़ज़्ले रब के अमीं सलामु अलैक

क़द्र अफ़ज़ाए क़रयए अफ़लाक
शाने रूए ज़मीं सलामु अलैक

पुर करम से तेरे हैं दामने दिल
शाहे दुनियाओ दीं सलामु अलैक

ज़ीनते सर है ताजे अव–अदना
ऐ मकां के मकीं सलामु अलैक

साकिनाने फ़लक कहें पैहम
फ़ख़्रे रूहुल अमीं सलामु अलैक

गुलशने अज़मतो फ़ज़ीलत के
ऐ गुलाबे हसीं सलामु अलैक

शाहे कौनेन , माहे इज़्ज़ो शरफ़
फ़ख़्रे ख़ुल्दे बरीं सलामु अलैक

सद्दे बाबे गुमाँ, चराग़े हुदा
मेह्रे चर्ख़े यक़ीं सलामु अलैक

काश तैबा में आ के 'नूर' कहे
ऐ शहे मुर्सलीं सलामु अलैक

सरकारे कायनात हमारा सलाम लो

सरकारे कायनात हमारा सलाम लो
ऐ मम्बए सिफ़ात हमारा सलाम लो

जिसके लिए सजाई गई बज़्मे आबो गिल
वो है तुम्हारी ज़ात हमारा सलाम लो

ऐ ताजदारे उन्फुसो आफ़ाक़ अस्सलाम
ऐ हासिले हयात हमारा सलाम लो

लब हाए शौक़ पर है तुम्हारे लिए दुरूद
कहते हैं शश जिहात हमारा सलाम लो

ऐ वो कि जिसने बख़्शिशे उम्मत के वास्ते
रो–रो के काटी रात हमारा सलाम लो

सदक़े तुम्हारे इज़्ज़तें पाईं तो कह उठे
लालो जवाहिरात हमारा सलाम लो

ऐ वो कि जिसके रौज़ए अक़्दस पे हर घड़ी
बरसें तजल्लियात हमारा सलाम लो

कहती हैं लम्हा–लम्हा तुम्हारी जनाब में
आयाते बय्यिनात , हमारा सलाम लो

सुब्हे निशात पढ़ती है सरकार पर दुरूद
कहती है चाँद रात हमारा सलाम लो

ऐ ताजदारे शहरे निअम, मस्दरे करम
ऐ जाने इल्तिफ़ात हमारा सलाम लो

ऐ नुक्तए उलूमो हिकम , नज़्मे आगही
सरख़ैले मोजिज़ात हमारा सलाम लो

ऐ काश 'नूर' कहता मैं रौज़े के सामने
या साहिबस्सलात हमारा सलाम लो

दाफ़ए आलामो कुलफ़त अस्सलाम

दाफ़ेए आलामो कुल्फ़त अस्सलाम
शाफ़ेए रोज़े क़यामत अस्सलाम

ऐ सिफ़ातो ज़ात में फ़र्दे फ़रीद
शाहकारे दस्ते कुदरत अस्सलाम

अस्सलाम ऐ साहिबे ख़ैरे कसीर
मन्फ़ज़े ख़ुल्को मुरव्वत अस्सलाम

अस्सलाम ऐ ताजदारे मुर्सलाँ
अस्सलाम ऐ जाने ख़िल्कत अस्सलाम

अस्सलाम ऐ मतलए सुब्हे करम
कुलज़ुमे जूदो सख़ावत अस्सलाम

अस्सलाम ऐ शम्ए बज़्मे कायनात
सदरे ऐवाने रिसालत अस्सलाम

ऐ रसूले आख़री महबूबे रब
ऐ महे चर्ख़े नुबुव्वत अस्सलाम

ऐ अमीने फज़्ले रब्बे कुन फ़काँ
ऐ क़सीमे जुम्ला नेअमत अस्सलाम

अस्सलाम ऐ बाइसे ईजादे कुल
मुन्तहाए जाहो अज़मत अस्सलाम

अस्सलाम ऐ मर्कज़े इल्मो हुनर
महवरे फ़हमो फ़िरासत अस्सलाम

अस्सलाम ऐ यारे ग़ारे मुस्तफ़ा
साहिबे सिद्क़ो सदाक़त अस्सलाम

ऐ उमर 'फ़ारूक़' बैने कुफ़्रो दीं
नाज़िमे बज़्मे अदालत अस्सलाम

जामेउल कुरआन उस्माने ग़नी
ऐ गुले बाग़े सख़ावत अस्सलाम

ऐ अलीयुल मुर्तज़ा शेरे ख़ुदा
फ़ातेहे बाबे विलायत अस्सलाम

आबरुए बन्दगी , शाने हया
सय्यदा ख़ातूने जन्नत अस्सलाम

ऐ हसन ऐ सय्यदे अहले जिनाँ
हामिले ताजे ख़िलाफत अस्सलाम

ऐ हुसैन ऐ मानिए ज़िब्हे अज़ीम
ऐ सिपहरे अज़्मो हिम्मत अस्सलाम

ऐ मोही उद्दीन ऐ ग़ौसुलवरा
ऐ मुग़ीसे दीनो मिल्लत अस्सलाम

ऐ मोईन उद्दीन कुत्बुल औलिया
वारिसे फ़ैज़े नुबुव्वत अस्सलाम

ऐ शहे नव्वाब दिलबन्दे रसूल
काशिफ़े असरारे वहदत अस्सलाम

'नूर' की हर साँस पढ़ती है दुरुद
दिल कहे साअत ब साअत अस्सलाम

साहिबे उम्दा सियर
तुम पे दुरूद और सलाम

साहिबे उम्दा सियर तुम पे दुरूद और सलाम
ऐ शहे जिन्नो बशर तुम पे दुरूद और सलाम

चाँद सूरज रूख़े पुरनूर की ख़ैराते जमील
कहकशाँ गर्दे सफ़र, तुम पे दुरूद और सलाम

सुर्ख़रू अन्जुमने गुल में हैं आक़ाए करीम
भेजकर ख़ाक बसर तुम पे दुरूद और सलाम

बज़्मे अन्जुम पे ही कुछ बस नहीं ऐ नूरे अज़ल
पढ़ती आई है सहर तुम पे दुरूद और सलाम

मेरा ईमाँ है नमाज़ उसकी न होगी कामिल
कोई भेजे न अगर तुम पे दुरूद और सलाम

आलिमे इल्मे लदुन, महबते कुरआने मुबीं
हामिले औजे नज़र तुम पे दुरूद और सलाम

फिर कभी धूप की सख़्ती से न पहुँचेगा ज़रर
भेज दे दश्त अगर तुम पे दुरूद और सलाम

तुम हो महबूबे ख़ुदा दर पे तुम्हारे आक़ा !
ख़म हैं कौनेन के सर तुम पे दुरूद और सलाम

तुम जो चाहो तो मिले दर्द की टीसों से निजात
मरहमे ज़ख़्मे जिगर तुम पे दुरूद और सलाम

रात दिन भेजते हैं कुँजे तमन्ना से हुज़ूर
'नूर' के दीदए तर तुम पे दुरूद और सलाम

रुबाइयां

होंटों पे गुलाब सा महकता है दुरूद
महताब सा ज़ह्न मे चमकता है दुरूद
खुलने लगते हैं बाबे रहमत ऐ 'नूर'
गुलज़ारे दुआ में जब चहकता है दुरूद

दीवारो दर को रहगुज़ारों को सलाम
सब गलियों को सब चौबारों को सलाम
इक गुलशने आलम ही नहीं जन्नत भी
करती है मदीने के नज़ारों को सलाम

ऐ जाने करम तुम पे दुरूद और सलाम
ऐ शम्ए हरम तुम पे दुरूद और सलाम
अल्लाह के महबूब रसूले रहमत
ऐ शाहे उमम तुम पे दुरूद और सलाम

राकिबे दोशे पयम्बर अस्सलातु वस्सलम

सलाम बहुज़ूर सैय्यदुश्शोहदा, फ़ातेहे कर्बला, दिलबन्दे फ़ातिमा, नूरे ऐनैन मुर्तज़ा, जिगर गोशए मुस्तफ़ा,हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

राकिबे दोशे पयम्बर अस्सलाम
ऐ हुसैन! ऐ शेरे दावर! अस्सलाम

कुर्रतुल ऐनैने सिद्दीक़ो उमर
नाज़िशे उस्मानो हैदर अस्सलाम

ज़िन्दगी तुझ से मिली इसलाम को
ऐ शहे ईसार पैकर अस्सलाम

ऐ दरे शब्बीर ये अज़मत तेरी
आसमाँ कहता है झुक कर अस्सलाम

ऐ हुसैन अपने लहू से आप ने
की रक़म तफ़सीरे वन्हर अस्सलाम

दश्त को तूने किया जन्नत बदोश
बाग़े ज़हरा के गुले तर अस्सलाम

ऐ हुसैन ऐ शहसवारे कर्बला
ऐ मेरे हामीयो रहबर अस्सलाम

ऐ हुसैन ऐ राहते जाने मलूल
ऐ क़रारे क़ल्बे मुज़्तर अस्सलाम

देख कर कहता है अहले बैत को
ख़ानदाने माहो अख़तर अस्सलाम

अज़्मो इस्तिक़लाल के बद्रे मुनीर
ऐ गुले शाख़े मुक़द्दर अस्सलाम

ऐ अमीरे इश्क़ औलादे अली
मेरे अब्बासे दिलावर अस्सलाम

ऐ शहे नव्वाब मीनारे ख़ुलूस
ऐ हुसैनीय्यत के ख़ूगर अस्सलाम

'नूर' के लब कह रहे हैं दम ब दम
मालिके तस्नीमो कौसर अस्सलाम

मिल्लत के ताजदार हमारा सलाम लो

सलाम बहुज़ूर सैय्यदुश्शोहदा, फ़ातेहे कर्बला,
दिलबन्दे फ़ातिमा, नूरे ऐनैन मुर्तज़ा, जिगर गोशए
मुस्तफ़ा,हज़रत सैय्यदना इमाम हुसैन अलैहिस्सलाम

मिल्लत के ताजदार हमारा सलाम लो
उम्मत के ग़मगुसार हमारा सलाम लो

ऐ वो कि जिसने राहे ख़ुदा में लुटाया घर
कहते हैं जाँ निसार हमारा सलाम लो

इसलाम का ये बाग़ तुम्हारे ही ख़ून से
अब तक है लालाज़ार हमारा सलाम लो

शादाब तुमसे दीं के शजर की है शाख़ शाख़
ऐ मौजए बहार हमारा सलाम लो

ऐ वो जबीं को जिसकी शहे कायनात ने
चूमा है बार बार हमारा सलाम लो

कहती हैं जिसको रिफ़अतें दोशे रसूले पाक
उस दोश के सवार हमारा सलाम लो

गिरदाबे इज़तिराब से बचना मुहाल था
ऐ मोजिबे क़रार हमारा सलाम लो

कहता था या हुसैन तेरा अज़्म देख कर
मैदाने कारज़ार , हमारा सलाम लो

कहता है करबला के असीरों का क़ाफ़ला
बा–चश्मे अश्कबार हमारा सलाम लो

मेरी कबीदा रुह का या शाहे करबला
कहता है तार तार हमारा सलाम लो

खिलता है क्या शहादते उज़्मा का तुम पे ताज
ऐ रब के शाहकार हमारा सलाम लो

आक़ाऐ दोजहाँ के दुलारे मेरे हुसैन
कहते हैं चार यार हमारा सलाम लो

कहता है कर्बला के फ़लक से अभी तलक
खुर्शीदे इफ़्तिख़ार हमारा सलाम लो

उड़–उड़ के कर्बला की ज़मीं से कहें हुसैन
ज़र्रात बेशुमार हमारा सलाम लो

तुमने लहू से अपने बुझाई थी उसकी प्यास
कहता है दश्ते ख़ार हमारा सलाम लो

हर बार हम हों बज़्मे तसव्वुर में रूबरू
हर बार बेशुमार हमारा सलाम लो

देता है 'नूर' वास्ता असग़र के खून का
शब्बीरे नामदार हमारा सलाम लो

तेरी अज़ीमतो जुरअत को बेशुमार सलाम

सलाम बहुज़ूर सय्यदना हज़रत इमाम हुसैन
अलैहिस्सलाम व रज़िअल्लाहु तआला अन्हु
की बारगाहे बेकस पनाह में

तेरी अज़ीमतो जुरअत को बेशुमार सलाम
हुसैन ! तेरी इमामत को बेशुमार सलाम

हुसैन ! तेरे तदब्बुर पे बे हिसाब दुरूद
हुसैन ! तेरी फ़िरासत को बेशुमार सलाम

तेरे जमाले दिल अफरोज़ पर हज़ार दुरूद
हुसैन ! तेरी वजाहत को बेशुमार सलाम

तेरे लहू से है सर सब्ज़ हौसलों का चमन
हुसैन ! तेरी शहादत को बेशुमार सलाम

अमीने शौकते काबा है संगे दर तेरा
हुसैन ! तेरी सियादत को बेशुमार सलाम

रसूल नाना तेरे , फातिमा है माँ तेरी
हुसैन ! तेरी नजाबत को बेशुमार सलाम

तेरे कमाल से ज़ाहिर कमाले मुरतज़वी
हुसैन ! तेरी नियाबत को बेशुमार सलाम

सितम का लश्करे जर्रार अब भी काँपता है
हुसैन ! तेरी शुजाअत को बेशुमार सलाम

दलीले अज़मते किरदार है तेरी हस्ती
हुसैन ! तेरी क़यादत को बेशुमार सलाम

मियाने ख़न्जरो शमशीर भी क़जा न हुई
हुसैन ! तेरी इबादत को बेशुमार सलाम

दुरूद हो तेरी औलादो आलो इतरत पर
हुसैन ! तेरी जमाअत को बेशुमार सलाम

हुसैन ! तेरा दयारे अता रहे आबाद
हुसैन ! तेरी सख़ावत को बेशुमार सलाम

तेरी तवज्जो ने रख्खी हैं 'नूर' पर नज़रें
हुसैन ! तेरी इनायत को बेशुमार सलाम

ऐ फ़ख़्रे सालिकाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

सलाम ब हुज़ूर शम्सुल आरिफ़ीन बदरुल कामिलीन
कुदवतुलवासिलीन फ़ख़रुस्सालिकीन महबूबुल मुक़र्रबीन
हजरत अलहाज सूफ़ी सय्यद नव्वाब अली शाह
हसनी अज़ीज़ी, जहाँगीरी, मुनअमी, अबुल उलाई,
चिश्ती, क़ादरी, सोहरवर्दी, नक़्शबन्दी
क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

ऐ फ़ख़्रे सालिकाँ शहे नव्वाब अस्सलाम
ऐ बद्रे कामिलाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

फ़य्याज़ो मेहरबाँ शहे नव्वाब अस्सलाम
ऐ जाने बेकसाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

दुनियाए मारिफ़त में है सिक्का तेरा रवाँ
ऐ रुमिए ज़माँ शहे नव्वाब अस्सलाम

ऐ नूरे चश्मे फ़ातिमा दिल–बन्दे मुर्तज़ा
आक़ा के जाने जाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

ऐ नाइबे हुसैनो हसन शाने बुलउला
ऐ फख़्रे ख़ानदाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

ऐ नुकता सन्जो नुकता वरो नुकता दाने हू
हक़ शानो हक़ बयाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

ज़ेबे तख़य्युलात , मताए दिलो नज़र
तौक़ीरे गुलसिताँ शहे नव्वाब अस्सलाम

रंजो अलम की धूप जिधर रुख़ न कर सके
तुम हो वो सायबाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

ऐ आसमाने मज्दो शराफ़त के माहताब
ऐ मेहरे इज़्ज़ो शाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

कहती है तेरी बारगहे नूरबार में
तनवीरे कहकशाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

चूमें बलाग़तों के सितारे तेरे कदम
ऐ अफ़सहुल्लिसाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

नज़रानए ख़ुलूस हमारा कुबूल हो
बहरे हसन मियाँ शहे नव्वाब अस्सलाम

कहती है 'नूर' झूम के हर शाख़े आरज़ू
महबूबे ईनो आँ शहे नव्वाब अस्सलाम

अकमलुल औलिया सलामु अलैक

सलाम ब हुज़ूर शम्सुल आरिफ़ीन बदरुल कामिलीन
कुदवतुलवासिलीन फख़रुस्सालिकीन महबूबुल मुक़र्रबीन
हज़रत अलहाज सूफ़ी सय्यद नव्वाब अली शाह
हसनी अज़ीज़ी, जहाँगीरी, मुनअमी, अबुल उलाई,
चिश्ती, क़ादरी, सोहरवर्दी, नक़्शबन्दी
क़द्दसल्लाहु सिर्रहुल अज़ीज़

अकमलुल औलिया सलामु अलैक
सय्यदुल अस्फ़िया सलामु अलैक

मअ्दने इल्म ऐ शहे नव्वाब !
शाने हिल्मो हया सलामु अलैक

रौशनी से तेरी जहाँ रौशन
ऐ दुरे बे बहा सलामु अलैक

अस्सलाम ऐ अमीरो नासिरे मा
मुर्शिदो रहनुमा सलामु अलैक

रंगे रुख़सार पर तेरे कुर्बाँ
शाख़े बर्गे हिना सलामु अलैक

सुब्हदम रोज़ दस्त–बस्ता तुझे
कहे बादे सबा सलामु अलैक

बज़्मे रूहानियाँ के शम्ए जमाल
नाइबे मुस्तफा सलामु अलैक

ऐ गुले बाग़े बू तुराब दुरूद
ऐ महे फ़ातिमा सलामु अलैक

अस्सलाम ऐ क़रारे ख़्वाजा हसन
राहते बुलउला सलामु अलैक

तुझ पे लाखों दुरूद ऐ नव्वाब !
ऐ दिले अतक़िया सलामु अलैक

'नूर' के दिल से आ रही है सदा
आसमाने अता सलामु अलैक